Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue- 3 | Sept-2014
Available online at www.lbp.world

रीतिकालीन कवि घनानंद की विरह व्यंजना और उनकी काव्य दृष्टि

डॉ. आनंद कुमार मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर- हिंदी,
प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद, शाहजहांपुर, उ०प्र०

घनानंद रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इन्हें स्वछंदतावादी कवि के रूप में भी जाना जाता है। घनानंद ने लगभग 41 ग्रंथों की रचना की जिसमे अधिकतर मुक्तक की श्रेणी में आती हैं। इनकी कुछ रचनाएं सुजानहित, क्रिपाकंद, वियोगवेलि, इश्कलता, प्रेम सरोवर, प्रेम पद्धति आदि हैं। इनकी रचनाओं का प्रथम संग्रह भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'सुंदरी तिलक' में प्रकाशित कराया था। इसके उपरान्त संभवतः रत्नाकर जी ने सुजान सागर नाम से घनानंद की रचनाओं का संग्रह प्रकाशित कराया। घनानंद एकमात्र कवि हैं जो प्रेम के लौकिक और आध्यात्मिक दोनों की स्पष्ट व्याख्या करते दिखाई पड़ते हैं उन दोनों में किसी को छोटा या उपेक्षित नहीं मानते।

घनानंद की काव्यानुभूति के भाव पक्ष में प्रेम तत्व की प्रधानता है। इस प्रेम तत्व के दो रूप दिखाई पड़ते हैं- लौकिक प्रेम और अलौकिक प्रेम। यही अलौकिक प्रेम कहीं न कहीं भक्तिपरक कविता के रूप में दिखाई पड़ता है। पुनः प्रेम प्रसंगों में घनानंद ने संयोग और वियोग दोनों अवस्थाओं का बहुत ही मौलिक वर्णन किया है। घनानंद मूलतः तो वियोग के ही कवि हैं किन्तु संयोग पक्ष भी इनके यहाँ काव्य में रीतिकालीन अन्य कवियों से सशक्त रूप में दिखाई पड़ता है। घनानंद के लिए प्रेम कोई लौकिक आचार नहीं बल्कि जीवन का सार है। उनका यह प्रेम मार्ग सरल और कठिन भी है। इनके यहाँ वियोग इतना प्रधान है कि संयोग की अवस्था में भी वियोग की अवस्था ही दिखाई पड़ती है। घनानंद की यह प्रेमानुभूति वैयक्तिक और वेदना छायावादी कवियों की पूर्वपीठिका के रूप में दिखाई पड़ती है। यही कारण है कि छायावादी कवियों की ही तरह घनानंद को भी स्वछंदतावादी कवि कहा जाता है।

यद्यपि घनानंद जी ने संयोग और वियोग दोनों का वर्णन किया है किन्तु उनकी वृत्ति संयोग वर्णन में विशेष नहीं रमी। संभवतः इसी कारण उनके संयोग वर्णन में वह मार्मिकता और तीव्रता नहीं है जो वियोग वर्णन में है। वे प्रधानतः वियोग के ही कवि हैं। अनुभूति जन्य विरह वेदना और उनकी मार्मिक अभियक्ति की दृष्टि से घनानंद श्रृंगार काल के श्रेष्ठतम कवि हैं। उनकी वियोगानुभूति परक रचनाओं में उनके प्राण बोलते प्रतीत होते हैं। उनके विरह निवेदन में गहरी अनुभूति, तीव्र करुणा, द्रवित करने वाली वीरता, असाध्य व्यथा और कसक का सागर उमड़ता दिखाई पड़ता है। उनके विविध छंदों में अभिव्यक्त विरह वर्णन की विविधता से ऐसा भाषित होता है मानो विरहिणी करवट बदल रही हो। उनकी एक-एक पंक्ति में उनका विरह विकल ह्रदय समाया हुआ है।

घनानंद का विरह अनुभूति प्रवण है। रीतिबद्ध कवियों की भांति उनमे राधा कन्हाई के सुमिरन का बहाना नहीं लाया गया है। न ही आध्यात्मिकता की आण में लौकिक प्रेम की आँख मिचौली ही है। घनानंद का विरह तो स्वयं भोगा हुआ यथार्थ है जिसमे ह्रदय की टीस, प्राण की तड़पन और मन की व्याकुलता का ही आधिक्य है। इस सम्बन्ध में स्वयं घनानंद का कहना है- "जिस पीड़ा को मई भोगता हूँ उसको जानने का दावा रात और दिन की वे सूनी घड़ियाँ ही कर सकती हैं जो मुझे तड़पता हुआ देखती हैं। वर्णन करने से तो वर्णन और वास्तविकता में दिन रात या ज़मीन आसमान का अंतर आ जाता है।"

"बखाने ते जाय परे दिनरात को अंतर।"

विरह मिलन की चरम दशा का आदर्श अभी तक "विछुरण मीन की और मिलन पतंग की" रहा है। मछली जिस प्रकार अपने प्रिय जल से विछुड़ जाने पर और पतंगा जैसे अपने प्रिय दीपक से मिलने पर मर मिटते हैं उसी प्रकार प्रेम पर मर मिटने की शिक्षा रीतिबद्ध कवियों ने दी। किन्तु घनानंद के प्रेम का आदर्श इससे कहीं ऊँचा है। उनका तो यह कहना है कि जीवित रह कर प्रिय वियोग को अनेक प्रकार के कष्टों को सहते हुए झेलना ही उचित कहा जा सकता है।

"हीन भये जल मीन अधीन, कहा कहु मो अकुलानी समाने"

घनानंद का जीवन पूर्णतः विरहमय है उनकी स्थिति का पता तो कोई तभी लगा सकता है जो क्षण भर अपने से अलग हो सके- "मो गति सूझी परे तबही जब होहुं खरिबहू आपते न्यारे।"

वियोगाधिक्य के कारण घनानंद जी गाने के माध्यम से ही रो रहे हैं-

"प्रेम आदि जागै लागै जहर घन आनंद को। रायिबो न आयिबो तो गाईबो ही रायिबो न। "

निरंतर लगे रहने वाले वियोग की अंतर्दाशाओं का जैसा मर्मस्पर्शी वर्णन घनानंद ने किया है वैसा श्रृंगार काल के शायद ही किसी कवि की रचना में मिलता है। प्रिय के वियोग में अनेक प्रकार की बातें, विचार, कल्पनाएँ उनके मन में उतरती रहती हैं। कभी वे सोचते हैं कि यदि प्रिय को प्रेम का निर्वाह न करना था तो आरम्भ से मुझे अपनाया ही क्यूँ। कभी उन्हें लगता है कि प्रिय का यह व्यवहार सर्वथा अनुचित है। कभी अपने प्रिय को क्रूर, अत्याचारी, निष्ठुर, निर्मम, निर्दयी आदि उपाधियों से भी विभूषित करते हैं तो कभी प्रियतम की रूप माधुरी का स्मरण कर विह्वल भी हो जाते हैं।

द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने घनानंद के विरह निरूपण को दस शीर्षकों में विभाजित किया है- रुपाशक्ति, आत्मदशा निरूपण, प्रिय की निष्ठुरता, प्रेम वैषम्य, उपालाम्भ, अंतर्वृत्तियों की बहुलता, प्रेम की एकनिष्ठता, प्रकृति का उद्दीपन, आकुलता और सन्देश प्रेषण आदि। रीतिद्ध कवियों की भाँती उनका ध्यान प्रकृति के बाह्य स्वरुप पर ही टिककर नहीं रह

जाता वरन ह्रदय पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी केन्द्रित है । संयोग के क्षणों में नायक-नायिका के बीच में हार भी पहाड़ जैसा लगता है-

"तब हार पहाड़ ते लागत हैं, अब आणि के बीच पहाड परे ।"

कुछ आलोचकों ने घनानंद के विरह वर्णन पर फारसी प्रभाव माना है । उनके कुछ छंदों पर इसका प्रभाव दिखाई भी पड़ता है- छाती पीटना, नसों का सूखना, अंगों का कटना आदि । वस्तुतः घनानंद मोहम्मद शाह रंगीले के मेरे मुंशी थे अतः दरबारी वातावरण के प्रभाव के कारण उनके विरह वर्णन पर फारसी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक भी था । किन्तु घनानंद का विरह वर्णन रीतिबद्ध कवियों की भाँति कहीं भी अस्वाभाविक नहीं लगता डॉ राम देव शुक्ल के शब्दों में "विरहानुभूति की अकथ गंभीरता जैसी घनानंद में मिलती है वैसी रीति कालीन अन्य कवियों में नहीं ।"

जिस प्रकार घनानंद की अनुभूति उच्च कोटि की थी उसी प्रकार उनकी अभियक्ति भी बड़ी मार्मिक है । घनानंद की भाषा सरस और मंजी हुई है इनकी भाषा के बारे में आचार्य शुक्ल का कहना है-"उनकी सी विशुद्ध सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में कोई और कवि समर्थ नहीं हुआ । विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुरी भी अपूर्व है ।" आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने घनानंद की भाषा को "नितांत निजी भाषा" कहा है । भावानुकूल भाषा लिखने के कारण उनके काव्य का जो बाव वैभव है वह उनकी भाषा की सफाई से और अधिक चमक उठता है । जहां ह्रदय की व्यक्तिगत सूक्ष्म भावनाओं को अभिव्यक्ति देने में सीढ़ी स्स्थि भाषा समर्थ नहीं होती वहां लाक्षणिक भाषा की अपेक्षा होती है । वे केवल ब्रजभाषा प्रवीण नहीं वरन भाषा प्रवीण भी थे । आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने घनानंद की भाषा की प्रशंसा करते हुए लिखा है- " यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा किसी और कवि का नहीं । भाषा मानो इनके ह्रदय के साथ जुड़कर ऐसी वशवर्तनी हो गयी थी कि ये उसे अपनी अनूठी भाव भंगी के साथ जिस रूप में कहते थे मोड़ सकते थे ....भाषा की पूर्व अर्जित शक्ति से काम न चलाकर उन्होंने उसे अपनी ओर से नयी शक्ति प्रदा की ।"

संस्कृत के तत्सम शब्दों को ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुसार ढालकर घनानंद ने उनका प्रयोग किया साथ ही ब्रजभाषा के ठेठ शब्दों का भी प्रयोग उन्होंने खूब किया जैसे-अनेरी (अनोखी), उखिल (पराया), ठौर (स्थान), धीजत (धैर्य) आदि । इसी के साथ घनानंद ने कुछ नए शब्दों का प्रयोग और निर्माण भी किया जैसे- अचानांक के लिए (अचका) । भाषा के नए प्रयोग में "लाजनि लपेटी" (लज्जा से लिपटी हुई), "आँखनि के उर" (आँखों के ह्रदय में) आदि ।

केशवदास, बिहारी आदि कवियों की भाँती काव्य के बहिरंग पक्ष का पोषण घनानंद को कभी प्रिय नहीं रहा । इसीलिए काव्य में चमत्कार को महत्त्व देने वाले इन कवियों को ही लक्ष्य करके घनानंद कहते हैं- " लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मोरे कवित्त बनावत ।" डॉ नागेन्द्र के अनुसार वचन भंगिमा या वक्रता का चरम विकास घनानंद के काव्य में मिलता है । वक्रता का अर्थ है टेढ़ी या असाधारण उक्ति । असाधारण शब्द प्रयोग अथवा वाक्य रचना से जहां चमत्कार उत्पन्न होता है वहां विद्वान् वचन भंगिमा मानते हैं ।

"अंग-अंग तरंग उठे दुति की, परहिं मनोरूप अबै घर च्वे।"

घनानंद की शैली में चमत्कार की अपेक्षा भाव की प्रधानता है। उनके भाव सूक्ष्म और बड़े गंभीर होते हैं जैसे-

"रस सागर नागर रूप लखैं अभिलासनी धार मझार बाहों।
सुनी सूझति धीर को तीर कहूँ पचिहारि कै लाज सिवाराग हौं।"

यहाँ अभिलाषा अर्थात प्रेम से मग्न व्यक्ति और वाणी में डूबते व्यक्ति का चित्र खींचा गया है। सागा, धारा, तीर और सिवार (कायी) के समानांतर रूप, अभिलाषा, धैर्य और लज्जा का वर्णन उक्ति में भाव भंगिमा भर देता है। घनानंद के अलंकृत शैली के बारे में आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है- "घनानंद ने अलंकृत शैली का व्यवहार बराबर किया है। पर पांडित्य प्रदर्शन के लिए कदापि नहीं। ह्रदय की नियति का सच्चा आभास देने के लिए ही किया है। इनकी रचना में अलंकारों का सहज सौन्दर्य है।" इनके काव्य में उत्प्रेक्षा, अपध्वनि, अतिशयोक्ति, व्यतिरेक, उपमा और विरोध आदि अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है। इन अलंकारों का प्रयोग बाह्य अलंकरण के लिए न होकर भावों का उत्कर्ष बढाने के लिए हुआ है। इसी तरह घनानंद की रचनाएं अधिकाशतः कवित्त और सवैया में लिखी गयी हैं। उनकी मुक्तक शैली की प्रशंसा करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- "ये वियोग श्रृंगार के प्रधान कवि हैं। प्रेम की पीर लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ है। प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक और जान्व्दानी का ऐसा दावा करने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं है।"

रीतिमुक्त श्रंगारी कवियों में घनानंद, ठाकुर, आलम और बोधा तथा रसखान आदि की गाड़ना की जाती है। लेकिन घनानंद की कविताओं में प्रेम की अनुभूति इनके निजी जीवन के प्रेम से जुडी होने के कारण इन्हें स्वछंदतावादी काव्य का श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं। द्वारिका प्रसाद सक्सेना के शब्दों में- " स्वछन्द कवियों में घनानंद सर्वश्रेष्ठ कवि हैं क्योंकि घनानंद के काव्य में रसखान से अनिर्वचनीयता भी है, आलम की सी उन्मुक्तता भी है। ठाकुर सी तन्मयता भी है और बोधा की सी रस सिद्धता भी है। परन्तु इन सबसे बढ़कर घनानंद में कुछ ऐसे असाधारण काव्य सौष्ठव के दर्शन होते हैं हो न रसखान में हैं, न आलम में न ठाकुर में हैं और न बोधा में।"

वस्तुतः किसी भी काल की रचना की सबसे बड़ी कसौटी पाठक पर पड़ने वाला प्रभाव माना जाता है। समय के परिवर्तन के साथ जो कविता जीवित रहती है वाही वास्तव में सुकविता होती है। इस दृष्टि से घनानंद का काव्य जितना अपने समय में प्रासंगिक है उतना अभी भी है और भविष्य में भी रहेगा। उनका काव्य अंतर्पीदा से ओत-प्रोत होता हुआ भी झलकता हुआ रस्कलास है। आत्मा अनुभूति का ऐसा कवि हिंदी में कोई दूसरा नहीं हुआ।

सहायक ग्रन्थ-

1- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन।

2- हिंदी साहित्य का अतीत-2, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन।

3- हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन।

4- हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन।

5- रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन, रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन।

6- मध्यकालीन हिंदी कृष्ण-काव्य में रूप सौन्दर्य, डॉ पुरुषोत्तम दास अग्रवाल, वाणी वितान प्रकाशन।

7- हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास, कमलापति त्रिपाठी, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।